महोदय, उत्तर प्रदेश के जनपद कन्नौज में गुरसहायगंज एवं अन्य स्थानों में 'सैलवन' सेवा के लिए पिछले अक्तूबर माह, 2004 में आवेदन किए गए थे, परन्तु अभी तक ग्राहकों को सिम-कार्ड उपलब्ध नहीं कराए गए। इससे जल्दी तो अब साधारण (लैंड लाइन) फोन का कनेक्शन मिल जाया करता है। प्री-पेड सेवा के कार्ड बाजार में ढूंढने पर भी उपलब्ध नहीं होते, जबकि अन्य सामानान्तर सेवाओं जैसे 'हच', 'एयरटेल' इत्यादि के प्री-पेड कार्ड कहीं भी मिल जाते हैं और रिचार्च किए जा सकते हैं गुरसहायगंज के पास लगे टावर की रेंज भी बहुत कम है, जिससे उक्त ग्रामीण क्षेत्रों की कनेक्टिविटी बहुत खराब है। महोदय, MTNL व अन्य संगठनों की तरह BSNL में मोबाइल सेवाओं के लिए कोई अलग व्यवस्था नहीं की गई है, न ही कोई अलग टीम है, जो कि केवल मोबाइल सेवाओं की ही देखभाल करे। मौबाइल सेवा के लिए कोई अलग से उपभोक्ता सेवा केन्द्र भी नहीं है, जिससे उपभोक्ताओं की समस्याओं का शीघ्र समाधान हो सके। महोदय, उपरोक्त गुरसहायगंज पूर्णतया ग्रामीण क्षेत्र है, यहां पर अन्य मोबाइल कम्पनियां तेजी से अपना नेटवर्क बढ़ा रही हैं, परन्तु BSNL की लेट-लतीफी के कारण इसके उपभोक्ताओं को परेशानियां हो रही हैं।

अत: मेरा सरकार से आग्रह है कि BSNL की मोबाइल सेवा को चुस्त-दुरुस्त किया जाए और इसको अन्य मोबाइल सेवा में संलग्न कम्पनियों के समकक्ष ही नहीं रखा जाए, बल्कि इसमें बेहतर सेवा हेतु विशेष प्रयास किए जाएं, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में इसका नेटवर्क बढ़ाने के लिए कारगर उपाय किए जाएं।

Concern over the safety of Passengers in the Railway

श्री राम नारायण साहू (उत्तर प्रदेश): माननीय उपसभापति जी, फिर एक हृदय विदारक धमाका और चारों ओर घायलों का चीखना चिल्लाना, प्रशासनिक एवं राजनीतिक भागदौड़ का दौर, वक्तव्यों एवं सहायता घोषणाओं का सिलसिला शुरू होता है। कुछ दिनों तक सभी स्तरों पर चौकसी एवं सतर्कता और उसके बाद फिर वही पूर्ववत् उदासीनता एवं सुरक्षा के प्रति ढीला-ढाला रवैया, उग्रवादियों को पुन: सक्रिय होने का न्यौता देता है।

माननीय उपसभापति जी, मैं आपके माध्यम से माननीय सदस्य साथियों से अनुरोध करता हूं कि हमें हर दुर्घटना से नया अनुभव एवं सुरक्षा चुनौतियों से सबक लेने की आवश्यकता है और सुरक्षा व्यवस्था में निरंतरता बनाए रखने की सर्वाधिक जरूरत है, अन्यथा सुरक्षा एवं सतर्कता, जो कि मात्र कुछ दिन ही रहती है, का कोई महत्व नहीं होता है। उग्रवादी संगठन बाट जोहते रहते हैं कि सुरक्षा एजेन्सी कब सुस्ताना शुरू करे। रेल विभाग का वह नाश कि जहां पर सुरक्षा सतर्कता का अन्त होता है, दुर्घटना की वहीं से शुरुआत होती है, यानी "सावधानी हटी, दुर्घटना घटी" सुरक्षा का मूल मंत्र है। आज अपने अन्दर झांकने की आवश्यकता है कि इस मूल मंत्र का पालन हम किस हद तक कर रहे हैं। सुरक्षा विशेषज्ञों द्वारा सुझाए गए उपायों पर किस हद तक अमल हो पा रहा है। सुरक्षित यात्रा की सबसे बड़ी गारंटी यही है।

माननीय उपसभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय रेल मंत्री से अनुरोध करता हूं कि वे रेल सुरक्षा के लिए विशेषज्ञों द्वारा एक सम्पूर्ण पैकेज बनवाएं और उसे सख्ती से लागू करवाएं क्योंकि भारतीय रेल भारतवासियों की जीवन-रेखा है। इसे सुरक्षित संरक्षित एवं निरंतर चलाए रखना हम सबकी मिली-जुली ज़िम्मेदारी है। धन्यवाद।

Demand to recognise the services and for giving rewards to persons who saved Passengers of Godavari Express

SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY (Andhra Pradesh): My Special Mention is pertaining to two brave people Suryam and Chandram who stopped Godavari Express and saved hundreds of lives. But, the response of the Railways is shocking.

THE DEPUTY CHAIRMAN: You please read the text.

SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY: I will elaborate the whole story.

Sir, on 9th July, 2005, night, there was a sudden heavy downpour in Telangana Region of Andhra Pradesh. At Ghanapur, near Warangal Railway Station, the lashing rain breached two village tanks and the gushing waters inundated the tracks and the bund, under the tanks, swept away, leaving the tracks hanging in the air.

Noting that, a 55-year old, Suryam, wanted to alert the driver of Godavari Express, which was expected to cross at any time. The station was 11 kms. away. So, it was not possible to go there and inform the station master. Suryam blasted a gelating stick on the track to attract the driver's attention. Another young man, Chandram, ran several kilometers to stop the train. Unfortunately, he was running on the parallel track and did not notice the train coming behind him. That train ran over him.

In the meanwhile, the driver of Godavari Express, Mr. S.K. Sinha, noticed the signal of sound given by Suryam and applied the emergency brakes. The train was stopped. After some time, Suryam reached there and informed the condition of the track to the driver. But, the driver argued that nothing would happen if the train goes at a minimum speed. But, Suryam has resisted. He told the driver, 'If you want to proceed, proceed only on my body.' The driver at last obliged him. Thus, the lives of hundreds of passengers of Godavari Express were saved. Much to the chagrin of everyone, the railway authorities announced a paltry sum of Rs.5,000 to